पुस्तक समीक्षा

आधुनिक बिहार के इतिहास का प्रमाणिक दस्तावेज

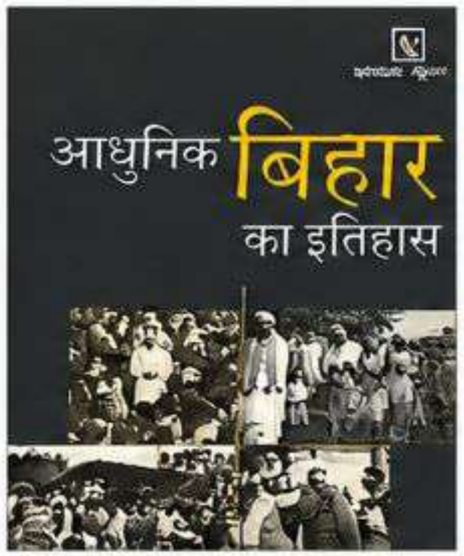

पुस्तक	आधुनिक बिहार का इतिहास
लेखक	कुमार विजय
प्रकाशक	संगम बुक्स ओरिएंट लॉन्गमैन
मूल्य	299 रुपए

राहुल रंजन

बिहार का इतिहास केवल एक क्षेत्र विशेष का इतिहास नहीं है, बल्कि यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम और समाज के रूपांतरण की महान गाथा है। मुगलों के पतन के बाद से लेकर अंग्रेजों के बाद गणतंत्र बनने तक, बिहार ने जो कर-वटें लीं, उससे समाज रूप से समस्या हमेशा से मौजूद रही। इसी समस्या को पूरा करते हुए हाल ही में आयी यह पुस्तक, जो आधुनिक बिहार के इतिहास को एक बेहद व्यवस्थित और क्रमबद्ध (क्रोनोलॉजिकल) रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत करती है।

विषय-वस्तु और विस्तार : यह पुस्तक कुल 19 अध्यायों में सिमटी हुई है, जो उत्तर-मुगल काल यानी 1707 से लेकर आजादी के बाद 1950 तक के दौर को समेटती है। चारों की से समेटती है। पुस्तक की शुरूआत उत्तर-मुगल बिहार के अध्ययन के सोने से होती है, जो शेरशाहियों के लिए बेहद मूल्यवान है। इसके बाद संक्रमणकालीन बिहार (1707-1740) और 1757 के बाद के राजनीतिक व प्रशासनिक इतिहास को बहुत ही स्पष्ट ढंग से समझाया गया है।

पुस्तक की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें बिहार के जन-आंदोलनों और क्रांतियों को उनके स्वरूप समग्र मिलता हैं—बाहवी आंदोलन, 1857 के पूर्व के आदिवासी व स्थानीय विद्रोह और 1857 की महान क्रांति में बिहार की भूमिका को लेखक ने बड़े दृष्टिकोण से रेखांकित किया है।

इसके अलावा, महात्मा गांधी की कर्मभूमि रहे 'चंपारण सत्याग्रह', असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, किसान आंदोलन और क्रांतिकारी राष्ट्रवाद (अमर सेनानी) जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर केंद्रित अध्याय न सिर्फ इतिहास के तथ्यों को उजागर करते हैं, बल्कि उस दौर के राष्ट्रवाद की भावना से भी परिचय कराते हैं। बिहार का एक अलग प्रांत के रूप में गठन (1912) और आज़ादी के तुरंत बाद (1947-50) का संक्रमण काल भी इस पुस्तक के मुख्य आकर्षण हैं।

भाषा, शैली और प्रस्तुति : लेखक की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और गंभीर है। इतिहास जैसे विषय को बोधगम्य होने से बचाते हुए इसे एक कहानी की तरह पिरोया गया हैं, जिससे पाठक की रूचि शुरू से अंत तक बनी रहती है।

किस के लिए उपयोगी : यह पुस्तक छात्रों, प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों, शोधार्थियों के लिए बेहद उपयोगी है। और अन्य राज्य स्तरीय परीक्षाओं की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों के लिए यह एक 'मस्ट-रीड' गाइड की तरह है।

विश्वसनीयता : डॉ. विद्यानर्थी: जिन विश्यविद्यालयों के सिलेबस में बिहार का इतिहास शामिल है। छात्रों और शोधार्थियों के लिए यह एक मानक संदर्भ ग्रंथ होगा।

आवरण पाठक : इतिहास में रूचि रखने वाले किसी भी आम इंसान के लिए अपनी जड़ों और अपनी मिट्टी के संघर्ष को जानने का यह एक बेहतरीन ज़रिया है।

निष्कर्ष : संक्षेप में कहें तो, यह पुस्तक केवल तारीखों और घटनाओं का पुलिंदा नहीं है, बल्कि यह आधुनिक बिहार के निर्माण की गाथा है। सामाजिक तथ्यों और बेहतरीन विश्लेषण से सजी यह पुस्तक हर उस व्यक्ति को पढ़ाई जाएगी है. जो बिहार को गहराई से समझना चाहता है।